तुम्हारे लिये
तुम्हारे बिना

— रमा जोशी

तुम्हारे लिये
तुम्हारे बिना

रमा जोशी

— रमा जोशी

Printer & Publisher प्रकाशक	Saket Prakashan N – 24 D / Saket New Delhi-110017
Copyright स्वात्वाधिकार	Rama Joshi
Publication Year	2007
ISBN No.	81-904145-0-X
Price	Rs. 100.00 £5 U.K.

समर्पण

अपने जीवन – साथी **शशि जोशी** को
जिनकी प्रेरणा
मेरे जीवन का सम्बल है।

विशेष आभार —

गीताजंलि साहित्यिक समुदाय - **बरमिघंम** - यू. के. के डॉक्टर **कृष्ण कुमार** और उनकी पत्नी **चित्रा** जी को — जिनके प्रोत्साहन और उत्साह के बिना यह कविताएँ पुस्तक का रूप न लेतीं।

सूची

1. प्रभात का जन्म 1
2. मेरे हिस्से का चाँद 2
3. शब्दों का माध्यम 4
4. विदेशी (धरती) माँ 6
5. मेले में खोई 8
6. बोलते खामोश चेहरे 10
7. माँ 11
8. ऐ लड़की 12
9. चलती फिरती एक कविता 14
10. प्यार के बारे में 16
11. चलो फिर 17
12. कागज़ का महल और कठपुतलियाँ 18
13. आवाज़ 20
14. कहाँ हो तुम 21
15. जीवन के मोती 22
16. पहले जैसी 23
17. मन चाहता है 24
18. एक सपना 25
19. मुट्ठी भर ज़िन्दगी 26
20. रानी का खून नीला है 27
21. माँग 28
22. खुशी की चिड़िया-1 30
23. फूल फूलों से 32
24. खुशी की चिड़िया - 2 33
25. लोग पुराने लगते हैं 34

26. प्रकृति और मैं 35

27. बचपन का घर 36

28. आँखें - चाहें - आँखें और समझौते 37

29. याद 38

30. कैसे जीते हैं लोग? 40

31. कत्ल करने वाली माँ 42

32. बुद्धिजीवी और युद्ध 44

33. क्या हुआ? 46

34. दुःख का मौसम 47

35. तुम्हारे बिना 48

36. मुस्कराते हैं 50

37. तूफान 52

38. कुछ और भी होगा क्या? 53

39. शाम से पहले शाम आ जाये 54

40. नींद नहीं 56

41. घर, लोग और एकान्त 58

42. ऐसे ही जीना है 59

43. सुन्दर वृक्ष 60

44. बीत गया 62

45. मौसम बदल रहे हैं 64

46. एक दिन आयेगा 66

47. चलो नहीं करते गिला 68

48. एक अजनबी मित्र से मुलाकात 70

49. रेत - तेल - खून 72

50. मेरी कविताएं 74

51. तुम यहीं हो 76

52. रास्ते 78

प्रस्तावना

कविता लिखना मेरे लिए अपने विचारों और भावनाओं को समझने और सुरक्षित रखने का साधन है, और मन की उथल पुथल को शान्त करने का एक आज़माया ढंग भी है। मैंने यह भी अनुभव किया है कि कई बार लिखना एक प्रार्थना का रूप ले लेता है — इन कविताओं में उस सर्वमान्य अदृश्य शक्ति से संसार में रहने के लिए शक्ति और धैर्य की अपेक्षा भी है। साथ ही हार्दिक धन्यवाद कि इस सुन्दर रचित संसार के हम वासी हैं। उस शक्ति के एक मान-भरा सम्बंध भी कुछ कविताओं में प्रकट होता है।

जीवन के सुख दुःख के पल तो कविता में आते ही हैं — और दुःख में डूबे कुछ लिख पाना — उस भावना से निकलने के प्रयत्न हैं — यह मानते हुए कि दुःख के अनुभव भी जीवन के अकाट्य सत्य हैं।

सही अर्थों में मेरे जीवन—साथी — शशि जोशी का विशेष प्रोत्साहन — मेरे लेखन के लिए सदैव रहता था और उनकी प्रेरणा, उत्साह और आत्मीयता मेरे जीवन के सम्बल हैं

— रमा जोशी
जून 2007
17, The Vale
Birmingham (UK)–B 11 4EN

1

प्रभात का जन्म

एक सुन्दर प्रभात का जन्म
कितना सुखद
दोपहर साँझ - रात

रात भी
एक सोया हुआ प्रभात ही तो है

एक दिन में प्रभात
इतनी कालिमा
कहाँ से ले आया है?

पुनः सारी थकान उतार
चहचहाता दिन आया है

रे मन -- तू ही तो प्रभात है
रात से घबराता क्यों है?
प्रभात - दोपहर - साँझ रात
सब तू ही तो है!

2

मेरे हिस्से का चाँद

उस देश के
लम्बे दिनों की रातें
चाँद कुछ पीला सा लगता
उसका दाग उजागर होता
तारों के झुँड चारों ओर टिमटिमाते

आकाश कुछ झुका सा लगता
टूटी नींद में
चाँद सिर के ऊपर टिका लगता
उसकी चाँदनी जगाये रखती
सोचती — यह चाँद
इस समय
सिर्फ मेरा है
मेरे अधूरे और रूमानी सपनों का साथी

इस देश में
पहले चाँद कुछ दूर हो गया
आकाश ऊँचा हो गया
तारे भी (संख्या) में कम हो गये
तारों और लोगों का अनुपात बराबर!

फिर चाँद — मेरे साथ-साथ चलने लगा
अब सपने दिन में भी देखती
आकाश का चाँद वहीं था
थोड़ा अजनबी — सुस्त — ठँडा
वर्षों का जीवन पलों में उड़ गया

पुनः अब चाँद आकाश पर जा टिका है
यह चाँद अब सिर्फ मेरा नहीं है
मेरे हिस्से का चाँद भी
इसमें घुलमिल गया है

❀❖❀

3

शब्दों का माध्यम

शब्दों में
संसार की सुन्दरता
समेटना चाहती थी

पवन की हिलोर
पत्तों का सरसराना
फूलों की हँसी
बच्चों का खिलखिलाना

पानी की खूबसूरत बूँदे
वर्षा का शोर
लहरों की दौड़

दुनिया के लोग
उन की चाह
आगे बढ़ने की
अनगिनत चेष्टायें

खुशी पाने के
लाखों प्रयास
जीवन सँवारने की
ढेरों प्रक्रियाएँ
खूबसूरती उजागर करने के
अनेकों ढँग

इन सबकी सुन्दरता को
शब्दों में पकड़ना चाहती थी

पर जब पर्दा गिरता है
कुछ भी नहीं बचता

इतना तो असली था नाटक
पर क्या नाटक ही था?

4

विदेशी (धरती) माँ

तू मेरी जन्म-भूमि नहीं
मेरे बच्चों की जन्म — भूमि है
तेरा मेरा तो गहरा नाता है
तेरी धरती पर सालों साल
बहुत कुछ पाया मैंने

तन के लिए ही नहीं
मन के लिए भी

तन मन की तपन को ठंडा करने वाली
तेरी सुखद हरियाली
तेरी प्यार से भिगाने वाली — बरसात
भिगाये सारा साल

कभी कभी उगने वाली
तेरी धूप के क्या कहने
ऐसी चमकदार और ताज़ा
जी चाहे डिब्बों में भर लो
और छुपा छुपा के रखो
इसी धूप की आस में

कितनी काली राते — अँधियारे दिन
एक से लगने वाले — रात और दिन
बीत जाते हैं

तेरी शांत नीली गर्मी की शामें
मानो कहती हैं
इतना लम्बा दिन है
अब तो कुछ कर लो

तेरी ऊँची नीची धरती
मुझे अब अपनी सी लगती है
तेरा प्यार — दुलार मुझ तक पहुँचता है
जैसे तू मेरे कदमों को पहचानती है......

तू मेरी जन्मभूमि नहीं
मेरे बच्चों की जन्म भूमि है
तेरा मेरा तो गहरा नाता है......

5

मेले में खोई

दुनिया के मेले में
खोई
लिए रिक्त मन
और खाली हाथ

एक बच्चा जैसे
मेले में खोया खोया
घूमें गुमसुम
माँ के दिए पैसे
खो गये हैं

दूसरे बच्चे
लिए बँद मुट्ठियाँ
घूमें

किससे चाहूँ?
किससे माँगू?
अपना खोया संसार

हाथों की रेखायें देखूँ
सोचूँ!
कहाँ खो गया सब?

प्रार्थना को उठते
खाली हाथ
क्या खाली हाथों ही होती है
प्रार्थना?

दुनिया के मेले में
खोई......

6

बोलते खामोश चेहरे

दुनिया देखी है — वाले चेहरे
जवान पर खाये हुए चेहरे
सन्तुष्ट सुन्दर चेहरे
थके चेहरे
परेशान चहरे
प्रश्न चिन्ह बने चेहरे
आशा भरे चेहरे
''कोई मुझे चाहता है'' — कहते, चेहरे
''मैं सब नहीं समझती'' कहते चेहरे
''मेरी कहानी सुनो'' — कहते चेहरे
मुस्कराते — सुलझे चेहरे
खामोश चेहरे
भेद भरे चेहरे
''तुम मुझे क्या समझोगे''? कहते चेहरे

खुली किताब चेहरे
हँस के राज़ छुपाते चेहरे
हँस के राज़ बताते चेहरे
''तुम कहाँ हो'' कहते चेहरे?
बोलते खामोश चेहरे......

7

माँ

तुम्हारी छाया स्नेह की
मेरे चारों ओर है
हजारों मील दूर
तुम्हारी स्नेह की बौछार
मुझे भिगोती थी

अब चीजों को छू कर
तुम्हारे स्पर्श को
ढूँढती हूँ

माँ तुम्हारा ममत्व
तुम्हारी सोच
बस अब याद करूँगी
अब यादें सँजो कर
तुम्हें साथ रखती हूँ
माँ......

8

ऐ लड़की

ऐ लड़की — ऐ लड़की
कब तू लड़की से
औरत बनी
और फिर माँ
दुलारने — फिक्र करने वाली माँ
अपने आप को
समझदार और कभी
नासमझ समझने वाली माँ
और अब
तू जवान नहीं रही
चीज़ें फैला कर
बना तेरा संसार
अब बोझिल हो गया है
ऐ लड़की — कब जागेगी
सोई ही रहेगी क्या?
साँझ हो गई है
दुकानें उठनी शुरू हो गई हैं
तेरा साथी समय से पहले ही

रुखसत हो गया है
　　　　शेष सफर
तुझे अकेले की काटना है
　　　　ऐ लड़की — ऐ लड़की
कब जागेगी?

❁❖❁

९

चलती फिरती एक कविता

चलती फिरती एक कविता
सहज
सरल
उत्सुक
खींचती
जैसे
चुम्बक

संभली संभली
आशा की किरणें बिखेरती
झेलती — समेटती
प्रशंसा जन समूह की

अनजाना एक भय
उपजे मन में
बचा कर तुम्हें,
छुपा कर तुम्हें
रखना चाहूँ

सबसे दूर
चुभन तेरी
जलन तेरी
सहेगा कौन?

तुम सहज सरल ही रहना
फूलों झरती
तुम कविता!

10

प्यार के बारे में

प्यार क्या है?
प्यार
किसी कोमल क्षण को
बाँधने का यत्न
किसी सुन्दर भावना को
जीने का यत्न

नहीं
इसे कोई नाम न दो
जब सब सन्तुलित हो
तो
शब्दों से
इसे बोझिल न करो

नहीं
इसे प्यार न कहो

एक सुन्दर सपने का अर्थ
क्या होगा?
बादल पर लिखी कहानी
सब उज्ज्वल
और कुछ भी नहीं

तुमने प्यार के बारे में पूछा.....

11

चलो फिर

चलो फिर भूल जायें
कुछ याद करने वाली बातें

चलो फिर याद करें लें
कुछ भूलने वाली बातें

चलो फिर बोझिल मन
हल्का कर लें

चलो फिर जी भर कर
रो लें

चलो फिर साँसों को
सजा लें

चलो फिर तुम्हारा साथ
दुहरा लें

चलो फिर तुम्हारी बातें
करे लें

चलो फिर भूल जायें......

12

कागज़ का महल और कठपुतलियाँ

जैसे कागज़ का महल
यह दुनिया

मीठी बयार चले
तपती धूप चमके
आँधी तूफान चले
मूसलाधार वर्षा हो

कागज़ का महल
भीगे सरोबार
कभी ठंडा हो
कभी तपे

कागज़ के महल की कठपुतलियाँ
कभी नाचे
कभी काँपे
कभी धागे टूटे कठपुतलियों के
कभी नींवे हिले
और सब बह जाये

पर आश्चर्य
कागज़ का महल
सारा नहीं भीगता
सारा नहीं टूटता
कुछ कठपुतलियाँ
बह कर भी
लग जाती है किनारे

और दुनिया चलती रहती है
कागज़ के महल बनते रहते हैं
कठपुतलियाँ नाचती रहती हैं......

13

आवाज़

तुम एक आवाज़ हो
भीड़ में
तुम्हारी आवाज़
अच्छी लगती है
पहले जैसी ही है

दूर है
तुम्हारी आवाज़
दूर
बहुत दूर
मीठी मन भावनी
तुम्हारी आवाज़
मन में
उतर गई है
तुम एक आवाज़ हो ......

14

कहाँ हो तुम

इस विशाल
चमकदार – नीले आकाश
काले बादलों वाली
कल – कल – छल – छल
पानी वाली
दुनिया में
कहाँ हो तुम?
हरे पत्तों की सरसराहट में
पक्षियों के कलरव में
बच्चों की खिलखिलाहट में
जवाँ आँखों के प्यार में
इन सब में
तुम ही तो हो!
मेरे हृदय में रहो
मेरा चैन बन कर
मेरा सम्बल बन कर
मेरे दिल का उजाला बनो तुम!!
सुनो, सुनो
सुन रहे हो न?
मेरे प्रभु? ......

15

जीवन के मोती

गहरे अन्धकार में खोई
चाहूँ
जीवन के मोती

पत्थर, रेत, शंख
बिखरे पड़े हैं
तुम्हारे चरणों पर
क्या रखूँ?

सुन्दर, कोमल, सुगंधित पुष्प
चहूँ ओर
तुम्हारे चरण कहाँ हैं?

मेरी सेवा स्वीकारो
प्रभु!

गहरे अन्धकार में खोई
चाहूँ
जीवन के मोती......

16

पहले जैसी

मैं तो पहले जैसी (ही) हूँ
आँधी तूफान - धूप महकती हवा
सब - मुझे छू-छू कर चले गये हैं
मेरा रंग भले मटमैला हो गया है
जब, मैं थकी नहीं होती
चाहूँ - तो फिर चमकती हूँ
सच मानो
मैं पहले जैसी ही हूँ
मेरा हृदय तुम्हें देख कर
फिर वैसे ही धड़कना चाहता है
पर मैं पूछती हूँ
'आज दिन को क्या खाया था?'
तुम कहते हो - 'फल कार में पड़े हैं'
फिर वही छोटी छोटी बातें
'जूते बाहर क्यों नहीं छोड़ते?
'कोट उतार क्यों नहीं देते'?
तुम्हारी कुर्सी खाली है
तुम्हारे लिए!
मैं तो पहले जैसी (ही) हूँ

17

मन चाहता है

मन चाहता है
नैया किसी सुन्दर पड़ाव पर पहुँचे
और थका मन
हरा-भरा हो जाये

मन चाहता है
समय रुक जाये
हम जी भर निहार लें
अपने प्यार को

मन चाहता है
कहीं फिर से
कुछ घड़ियाँ मिल जायें

मन चाहता है
सोचे - बैठें
हम नई मान्यताएँ बनायें

मन चाहता है......

18

एक सपना

तुम ने मुझे एक सपना दिया
मन के अन्धेरे को जगमगा दिया
तुम ने मुझे एक उलझन दी
मेरी कई उलझनों को सुलझा दिया
तुम ने मुझे एक राह दी
मेरी मंजिल को आसां बना दिया
तुम ने मुझे एक कल्पना दी
मेरे संसार को काव्यमय बना दिया
तुम ने ख्यालों में आकर
मेरी उमंगो को बहका दिया

तुम्हारे प्यार ने मुझे एक डर दिया
मुझ साहसी को डरना सिखा दिया

तुम ने मुझे एक सपना दिया
मन के अन्धेरे को जगमगा दिया

19

मुट्ठी भर ज़िन्दगी

मुट्ठी भर ज़िन्दगी
मुट्ठी में कहाँ रहती है?

जीवन सारा कहाँ होता है?
बातें पूरी कहाँ होती हैं?
जीवन अच्छा कहाँ रहता है?
किनारा नजर कहाँ आता है?

मुट्ठी भर ज़िन्दगी
मुट्ठी में कहाँ रहती है?

20

रानी का खून नीला है

रानी का खून नीला है
बाकी सब का लाल
इस बात को लेकर
रानी की जय-जयकार

रानी की जय-जयकार
कहे सब नर-नारी
किया तुमने हमें खुशहाल
तुम सब से न्यारी

तुम सब से न्यारी
क्या है तुम्हारा चमत्कार
बुद्धि पूछे मेरी अनाड़ी
क्यों है तुम्हारा यह सत्कार

क्यों है तुम्हारा यह सत्कार
मत पूछो बस ध्वजा हिलाओ
और करो स्वीकार
रानी का खून नीला है

उसकी करो जय-जयकार

21

माँग

क्यों माँगते हो और जीवन?
जो अब तक किया
वही तो करते जाओगे!

क्यों माँगते हो और जीवन?
क्या जीने से
तुम्हारा जी भर जायेगा?

क्यों माँगते हो और जीवन
क्या बिखरे काम
सँवार पाओगे?

क्यों माँगते हो और जीवन
क्या जी कर
औरों को सुख दे पाओगे?

क्यों माँगते हो और जीवन
क्या जीवन गुत्थी
सुलझा पाओगे?

क्यों माँगते हो और जीवन
जो अब तक किया
वही तो करते जाओगे!!

❁❖❁

21

माँग

क्यों माँगते हो और जीवन?
जो अब तक किया
वही तो करते जाओगे!

क्यों माँगते हो और जीवन?
क्या जीने से
तुम्हारा जी भर जायेगा?

क्यों माँगते हो और जीवन
क्या बिखरे काम
सँवार पाओगे?

क्यों माँगते हो और जीवन
क्या जी कर
औरों को सुख दे पाओगे?

क्यों माँगते हो और जीवन
क्या जीवन गुत्थी
सुलझा पाओगे?

क्यों माँगते हो और जीवन
जो अब तक किया
वही तो करते जाओगे!!

❁❖❁

22

ख़ुशी की चिड़िया - 1

ख़ुशी की चिड़िया चहक रही हो
औरों के घर महक रही हो

दूरी पर रोशन लगती हो
पास जाने पर चुप लगती हो

दूर क्षितिज चिड़िया जा बैठे
कितने करतब – कितनी कोशिश
कि चिड़िया हमारे बनेरे उतरे

कोई धन से उसे लुभाते
रूप और बल से उसे बुलाते

ख़ुशी की चिड़िया पास तो आए
पल-भर में वह फिर उड़ जाये

ख़ुशी की चिड़िया
पास तो आओ
मुझे बताओ
बोलो क्या दाना खाओगी?

मेरे पड़ोसी मुझे बतायें
कल घर मेरे चिड़िया आई थी
मस्ती से वह चहक रही थी
मस्ती से वह महक रही थी

कैसी यह तकदीर है मेरी
कल तो मैं घर से बाहर थी
इसी चिड़िया को गई रिझाने
द्वारे द्वारे भटक रही थी

खुशी की चिड़िया ......

23

फूल फूलों से......

फूल फूलों से बात करते हैं
काँटे कट कट के मरते हैं

खुशबू हवाओं से बात करती है
बिनकहे माहौल बदलती है

'गर इन झोंकों से हिल जाओगे
गम सहने की हिम्मत कहाँ से लाओगे?

सिमट कर अपने में ही
तुम किसे बदल पाओगे?

यह दुनिया क्या बस तुम्हारी है?
यह बाज़ी क्या अकेले ही हारी है?

फूल फूलों से ......

24

खुशी की चिड़िया - 2

खुशी की चिड़िया
मेरे बनेरे उतरो
दुःख के दाने खाओ
सुख से चहचहाओ

खुशी की चिड़िया
मेरे आँगन उतरो
दुःख के गान सुनो
सुख की तान सुनाओ

खुशी की चिड़िया
मेरे बनेरे उतरो
मुझ से सीखो
मेरे पास आओ

खुशी की चिड़िया
खुशी बाँट कर
फिर उड़ जाओ

खुशी की चिड़िया ......

25

लोग पुराने लगते हैं......

नये परिधान में ढका
यह मन पुराना लगता है
सब लोग पुराने लगते हैं
सब शोर पुराने लगते हैं
हर आँख थकी सी लगती है
चेहरे मुरझाये लगते हैं
वाद-विवाद पुराने लगते हैं
ये भाव पुराने लगते हैं
चाल-ढाल पुराने लगते हैं
कहकहे पुराने लगते हैं
यह गीत पुराने लगते हैं
यह मीत पुराने लगते हैं
प्रभु तेरी माया
तेरा हर दिन नया
तेरी हर रात नयी
तेरी हर धूप नयी
तेरी हर बरसात नयी
हे सर्वश्रेष्ठ
तेरी अद्भुद्ध सृष्टि का अभिनंदन
तेरी प्रशंसा
इन (नये) पुराने शब्दों में!

26

प्रकृति और मैं

सजी-धजी है प्रकृति
डाली डाली पक्षी हैं झूमें
नया हो कर आया है दिन

हरी घास फूलों को दुलारे
नहा-धो कर आया है आकाश
रोज़ की चहल-पहल शुरू

तुम भी
सज धज के
तन कस के
लिए मन बस में
दुनिया का सामना करो

साँस लिए
आस लिए
जियो

प्रभु ने जीवन दिया है
प्रभु ने जीवन दिया है

27

बचपन का घर

घर ईंट और पत्थर
सब वही हैं
पर लोग जो इसे सीमेंट की तरह जोड़ते थे
बिखर गए हैं
अब यह घर घर नहीं

एक वक्त की मार खाया मकान है
जिसका हर एक निशान
हर एक घाव
साफ़ नज़र आता है

कितना रोष आता है
इसके टूटने पर
क्यों ठीक नहीं करते
इसके दोष

फिर सोचती हूँ
यह घर चाहे
टूट कर दोबारा भी बने
यह अब कभी
मेरा घर नहीं बन पाएगा।

28

उमँगे - चाहें - माँगे और समझौते

उमँगे
नन्हीं लहरें
एक छोटे से तालाब में
जैसे नन्हें बच्चे

चाहें
लहरें और बवंडर
रात के अँधियारे में
जैसे उगता यौवन

माँगे
अपनी - पराई
घुमड़ते तूफ़ान
यौवन की उतरती धूप

समझौते
स्वयं से   औरों से
जैसे शान्त होते सागर

अब जाना होगा ......

29

बाट

दूर
बहुत दूर
मेरी आँखें
किसी को निहारती रहती हैं
किन्हीं अन्चीन्हे कदमों की
बाट जोहती रहती है

दूर बहुत दूर
मेरे प्राण
किसी आहट की प्रतीक्षा में
जागते रहते हैं
मन के किवाड़
कभी बन्द नहीं करते
दूर बहुत दूर
मेरी कल्पना
उन क्षणों को संजोये रखती है
वह क्षण जो
मेरी आत्मा को प्रकाशित कर देंगे

दूर ना जाने
कितनी दूर
मेरी आकाँक्षायें
भागती रहती हैं · किसी सुनहरे
भविष्य को लाने
बन्दी करने

जो ना जाने कब
कैसे
किस रूप में आएगा?
दूर बहुत दूर
मेरी आँखें किसी को निहारती
रहती हैं ......

30

कैसे जीते हैं लोग?

कितने समझौतों को मिलाकर
एक जीवन बनता है
कैसे जीते हैं लोग
जो कोई समझौता नहीं करते?

सच क्या है
मान्यताएं क्या हैं
जीवन ऐसा क्यों है
बिना जाने ही
जी लेते हैं लोग?

उठ कर सो जाते हैं
सो कर उठ जाते हैं लोग

और प्यार
कब करते हैं
किससे और क्यों?
बिना इसके भी जी लेते हैं लोग?

दिल को क्या छूता है?
क्या उसके टुकड़े होते हैं?

क्या यूँ ही सवाल करते हैं लोग?
उत्तर पाने को
क्या करते हैं लोग?
सच कहो ......
कैसे जीते हैं लोग?

31

काम करने वाली माँ

सुबह ......
सब कुछ बर्फ से ढका
शान्त सुन्दर

सुबह ......
और वही रोज वाली भागदौड़
निरन्तर ......

सुबह ......
फिर सौंप देना स्वयं को
बेगानी दुनिया के अन्दर

शाम ......
राह बनाना जनसमूह में
घर जाने को आतुर

शाम ......
और खाली आँखों से देखना
सब लौटती चहल-पहल

शाम ......
उत्तेजित मन देखने को
एक नन्हा मन कातर

उसकी आँखों की चमक
उसके चेहरे की ललक
कितनी प्यारी
कितनी भोली

वह छोटा सा नादान
सारा दिन परायों में रह कर
अपनत्व ढूढँता मुझ में

सब सार्थक हो जाता!

32

बुद्धिजीवी और युद्ध

बुद्धिजीवी कहते रहे
युद्ध नहीं होगा।
अब दुनिया बदल गई है
युद्ध से भला कुछ संवरा है?
जीवन बहुमूल्य है
बुद्धिजीवी कहते रहे!

युद्ध हुआ – धमाके से
धमाके पर धमाके हुए ......
इमारतें खंडहर हुईं
निर्दोष जाने गईं
सब दलीलें नाकाम
बुद्धिजीवी कहते रहे!!

समाचार सुने नहीं जाते
तस्वीरें देखी नहीं जातीं
इसलिए – समाचार सुनना बन्द
तस्वीरें देखना बन्द
बुद्धिजीवी कहते रहे !!!

जीत तो निश्चित ही थी
ज़ालिम को मरना ही था
पर मरा कहाँ?
चलो कुछ राहत मिली

युद्ध खतम हुआ
बुद्धिजीवी कहने लगे
जो हुआ सो हुआ
कोई और बात करें
दुनिया बहुत बड़ी है

बुद्धिजीवी कहते रहे!!!!

33

क्या हुआ?

तुम और तुम्हारा प्यार
वह तुम्हारी आँखों की चमक
वह मेरे दिल की धड़कन
किस भूल भुलैयाँ में खो गये?

काम और काम का खालीपन
आना और जाना – वैसे ही
सूखे विषयों को लेकर
बतियाना

खाली बातें!
खाली लोग!

यह सब तो हुआ
इतना तो कहो
तुम्हारी कविता का क्या हुआ?

34

दुःख का मौसम

दु:ख का मौसम आया है
साथ फीके काले रंग लाया है
दु:ख झेलो आँसू छलकाओ
साँस रोक कर आँखें मीचो
शोर मचाओ
कौन सुनेगा?
दिल दुखाओ
कौन सुनेगा?
दु:ख का मौसम आया है
साथी फीके काले रंग लाया है
बौछार में
अकेली
भीगती हूँ
सोचती हूँ
यह दु:ख
मुझे
डुबो क्यों नहीं देता? ......

दु:ख का मौसम ......

35

तुम्हारे बिना

तुम्हारे बिना
संसार
कोलाहल से भरा
उजाड़ है

कैसी हूँ मैं
कभी
तुम्हारे बिना भी
हँस लेती हूँ
रो लेती हूँ

दुःख कितना भारी है
सुख कितना हल्का था
पर लगाकर उड़ गये
सुख के दिन
आकर जम गये हैं
दुःख के दिन

नहीं
दुःख में दिन कहाँ
बस रात होती है
दुःख से कैसे मुँह चुराऊँ
पर्वत को
बादल समझने में लगी हूँ

शेष जीवन
छोटा तो हो ही नहीं सकता!

36

मुस्कराते हैं

बाहरी तूफान
गरजते हैं
बरसते हैं
तेज हवाओं से
तहस नहस करते हैं
डरा धमका कर
पानी पानी हो जाते हैं

भीतरी तूफान
गरजते हैं
बरसते हैं
घुमड़ घुमड़ कर
निकलने का रास्ता ढूँढ़ते हैं

भावों को उभारते हैं
कभी मन को
रसातल में ले जाते हैं
आँखों के पानी से
यह तूफान कहाँ निकल पाते हैं

तूफान को लिए लिए
हम मानव
कभी यूँ ही
मुस्कराते हैं ......

37

तूफान

तूफान आते हैं
चले जाते हैं

यह कैसा तूफान है
मेरे साथ साथ चलता है

बाहर थमता है
कभी भीतर जा घुसता है

तूफान से दूर
जगह तलाशती हूँ

कौन कहेगा
तूफान चला गया है?

इस तूफान को क्या
स्थायी जगह देनी होगी?

तूफान आते हैं
चले जाते हैं ......

38

कुछ और भी होगा क्या?

तुम्हारे साथ
यह जहां तो था,
जहां और भी हैं
का अहसास भी था

तुम्हारे बिना
यह जहां ही न रहा
इसके काम
दौड़ धूप
बातें
अन्दर-बाहर
सब बेमानी हो गए हैं

और दूसरा जहां
होगा तो
जिसे तुम आबाद कर रहे हो!

और कितने जहां हैं?
जिनमें तुम हो
तुम्हारी बातें
तुम्हारा अहसास!!

कुछ और भी होगा क्या?

39

शाम से पहले शाम आ जाये

शाम से पहले शाम आ जाये
और अंधेरा घिर आये
तो आश्वस्त रहना
दिन बादलों के पीछे है
धूप भले न रहे
मन में उजाला रखना

जीवन की शाम भी तो आएगी ही
देर – सवेर
अपनी बार सभी को
सवेर ही लगे!

शाम भी क्या बुरी है
शाम तो शांत साधना है
सुलझी सुलझी
न दोपहर की भाग दौड़ से त्रस्त
न अन्धेरे से काली

सांझ को अंतस्त कर लो
लेखा–जोखा कर लो
रूको ठहरो
संभल सको तो संभलो
मन का सामान तैयार कर लो
तन का तो
छूटने ही वाला है!!

शाम से पहले शाम आ जाये
और अंधेरा घिर आये
तो आश्वस्त रहना ......

40

नींद नहीं

हैरान हूँ
सो जाती हूँ
कितनी बार

(जब) नींद नहीं आती
तो सोचती हूँ
नींद आए कैसे
नींद न आने की
सौ वजहें हैं
जाने नींद आ कैसे जाती है?

(कभी) पहले भी
नींद नहीं आती थी
जागी जागी
तुम्हारी सोने की आवाज सुनती
दूसरे घर की आवाजें
चुप शान्त

सोचती रहती
सब कुछ तो ठीक है
नींद जाने क्यों नहीं आती?

तुम्हारे बाद
तुम्हारे बिना
हैरान हूँ
कि सो जाती हूँ
कितनी बार ......

41

घर, लोग और एकान्त

वह घर
शोर-कोलाहल
जिस पर हावी था

वही घर
चुपचाप बैठा है

(चुप्पी जो मुझे पसन्द थी)
शोर मचाने वाले लोग
बिखर गयें हैं

घर की धुरी के टूटने से
बिखरे बिखरे हम
खोये रहते हैं
अपने-अपने संसार में

न शोर-शोर लगता है
न एकान्त-एकान्त

42

ऐसे ही जीना है

आँसू को पीना है
ऐसे ही जीना है
उमड़ते तूफान से
बच कर निकलना है
बाहर भी जाना है
अन्दर भी आना है
बाहर देखकर हँसना है
अन्दर देखकर रोना है
खुशी को ढूँढना है
आँसुओं से सजाना है
हँस-हँस के रोना है,
रो-रो कर हँसना है
आँसू को पीना है
ऐसे ही जीना है ......

43

सुन्दर वृक्ष

सुन्दर वृक्ष
चुपचाप खड़े हैं
जैसे राह चलते
पत्तों के बोझ से थके
रुक गये हों साँस लेने

सुन्दर वृक्ष चुपचाप खड़े हैं
बाहें फैलाये
कुछ आकाश की ओर
टकटकी लगाए
कुछ धरती की ओर
झुके झुके
किसी की प्रतीक्षा में

पतझड़ में
नंगी शाखाएँ लिए
ठिठुरते हैं वृक्ष
और
नई कोपलों की राह देखते हैं!

नया जीवन
पीड़ाजनक होना
क्या आवश्यक है?
सुन्दर वृक्ष
चुपचाप खड़े हैं ......

44

बीत गया

बीत गया -- बीत गया
एक और दिन
कल आएगा
मैं रहूँ न रहूँ
समय रहेगा
और रहेंगे — रात दिन

जानते हैं
समय ऐसा ही न रह पायेगा
ये ही पल बीत जायें
तो इनका मूल्य बढ़ जायेगा

आने वाले लोग
बीते समय पर तरस खायेंगे
कैसे लोग थे — बेचारे
पिछड़े — भोले — अनजान
आज हम भी तो

अपने कारनामों पर
फूले नहीं समाते हैं
आज जहाँ है
समय के साथ हैं
बराबर पाँव बढ़ाते
भले कितना ही दौड़ें
समय हमें पीछे छोड़ जायेगा

बीत गया — बीत गया
एक और दिन......

44

बीत गया

बीत गया -- बीत गया
एक और दिन
कल आऐगा
मैं रहूँ न रहूँ
समय रहेगा
और रहेंगे — रात दिन

जानते हैं
समय ऐसा ही न रह पायेगा
ये ही पल बीत जायें
तो इनका मूल्य बढ़ जायेगा

आने वाले लोग
बीते समय पर तरस खायेंगे
कैसे लोग थे — बेचारे
पिछड़े — भोले — अनजान
आज हम भी तो

अपने कारनामों पर
फूले नहीं समाते हैं
आज जहाँ है
समय के साथ हैं
बराबर पाँव बढ़ाते
भले कितना ही दौड़ें
समय हमें पीछे छोड़ जायेगा

बीत गया — बीत गया
एक और दिन......

45

मौसम बदल रहे हैं

कहते हैं
मौसम बदल रहे हैं
दुनिया भर के

कहीं पानी ज्यादा बरस रहा है
कहीं धूप कहर ढा रही है
तो कहीं आँधी तूफानों की तहस
नहस है
विश्व का संतुलन बिगड़ रहा है
सरकारें परेशान हैं!

मन के भी मौसम होते हैं
वह भी बदलते हैं
उम्र से लोगों से - काम से
बाहरी मौसम - भीतरी मौसम जुड़े हैं
मन के मौसम का संतुलन भी बिगड़ रहा है

दुनिया बचाओ
के आन्दोलन हैं
सवाल यह है?
बाहरी दुनिया बच भी गई
और भीतरी दुनिया न बची
तो क्या होगा?

कहते हैं
मौसम बदल रहे हैं
दुनिया भर के ......

46

एक दिन आयेगा

एक दिन आयेगा
जब तुम्हें यह सब नहीं करना होगा
जब तुम्हारे पास
मन पसन्द काम होगा
जब तुम सुबह जागोगे
अपनी मर्जी से
खुश मन तैयार होगे
उत्सुक कुछ करने को
जब तुम्हें अच्छा लगेगा
अच्छा लगना
जब खुला नीला आकाश
तुम्हारे मन का होगा
जब चारों ओर का खुलापन
तुम्हारे मन की परतों को खोल देगा
जब तुम्हें लगेगा
तुम्हारे बस में है जीवन

जब तुम्हारा तन - मन हल्के पन से

उड़ने को चाहेगा

और उड़ेगा

संसार देखने नयी आँखों से

शायद इसी को नया जन्म कहते हैं

पर हाँ इस के लिए मरना होगा क्या?

इस जन्म में भी क्या

नया जन्म ले सकते हैं न?

47

चलो नहीं करते गिला

अच्छा चलो नहीं करते गिला
तुम्हारी दुनिया का
कि
किसी को पानी दिया
किसी को प्यास
किसी को रूप दिया
किसी को आस
किसी को घर दिया
किसी को घर रहने वाले
किसी को बुद्धि दी
किसी को इसे खर्चने की समझ
किसी को जीवन दिया
किसी को जीने की ललक
और सबको दी – सब को दी
खुशी पाने की अदम्य चाह
जो सम्मुख हो

उसे न देख पाने का अन्धापन
प्रभु, ऐसा क्यों
जीने की कला
सिखाओ न!
यह गुत्थी सुलझाओ न !!
अच्छा, चलो, नहीं करते गिला
तुम्हारी दुनिया का ......

48

एक अजनबी मित्र से मुलाकात

वर्षों बाद - वह मिला - अचानक
उसकी भोली आँखें
उसका बात करने का अन्दाज
उसका शान्त चेहरा
सब वैसा ही था
पर वक्त का बेरहम घोड़ा
उसे रौंद गया था

बीते वक्त की खाई से
कुछ क्षण बाँटे
कुछ बीते संवाद
कुछ क्षणों के लिए - जीवंत हुए

सहसा ध्यान आया
इस मित्र को तुम्हारे चले जाने का भान नहीं
कैसे कहूँ
उसने पूछा - कैसे मैं मेरे मित्र?
खिले माथे

अब तक बात करती रही थी
दो वाक्यों में बताया
हैरान होने का
चेहरे के भाव- बदलने का समय
भी ठीक से नहीं मिला

अच्छा - कहाँ रहते हो आजकल
कहा अन्दर ही अन्दर
मन बुझ गया

मेरे प्रिय - मैं और करती भी क्या?
तुम तो साथ ही हो!
सोचती रही - घर लौट कर
तुम्हें सब बताना है
सुन रहे हो न?
मेरे प्रिय ......

49

रेत - तेल - खून

रेत में मिला खून
ज्यादा देर तक
लाल नहीं रहता

रेत रंग के साथ
पानी को भी
सोख लेती है

रेत को खून नहीं चाहिए
उस के तले में
कहीं तेल है

खून जीवन का तेल
धरती के तले
नहीं बहता

तेल की कीमत
पैसा है या खून
या दोनों

तेल लेने वाले खून भी
खरीदते हैं
वह खून जो
रेत में जा मिलता है

कहीं है – शायद
समझदार लोग
जो समझते हैं
इन पेचीदा मामलों को

मुझे बस – इतना पता है
रेत को खून नहीं चाहिए
रेत में मिला खून
ज्यादा देर तक
लाल नहीं रहता

50

मेरी कविताएं

सुलगते धुएँ और कुछ भाप जैसी
मेरी कविताएं
अंतरतम की ढेरों बातें
कविताओं में जा बैठी है
जाने इन्हें कोई और भी
ऐसी तो कोई मंशा न थी

दूर देश भेजा है इनको
भेज इन्हें
कुछ दुविधा में हूँ
तन को ढकने वाली मैं
मन को क्यों किया उजागर?

सुख दुःख के यह ब्योरे
छोटी छोटी काव्य रेखायें
कविता क्या ऐसे होती हैं?
हो न इनमें बस गहरी बातें?
दीन और ईमान की

और भगवान की?
मैं तो बस इतना जानूँ
शब्दों से मन को सहलाने वाली
ज़ख्मों को मलहम लगाने वाली
सुलगते धुएँ
और कुछ भाप जैसी
हैं – मेरी कविताएँ

प्रतिक्रिया कुछ तो होगी
क्या चाहती है – यह लेखनी
लिए कुछ फूल – पत्तियाँ
जाने क्या देना चाहती है?
जाने क्या लेना चाहती है?

51

तुम यहीं हो

लोग मिलते हैं
बातें करती हैं
तुम नहीं हो ......
बाहर जाती हूँ
पैदल चलती हूँ
तुम नहीं हो ......
चीज़ें लेती हूँ
समाचार पढ़ती हूँ
तुम नहीं हो ......
बाहर देखती हूँ
कितना शोर है
तुम नहीं हो ......
डाक आती है
पत्र खोलती हूँ
तुम नहीं हो ......
घंटी बजती है
फोन आते हैं
तुम नहीं हो ......
लोग आते हैं
लोग जाते हैं

तुम नहीं हो ......
पूजा करती हूँ
भजन गाती हूँ
तुम नहीं हो ......
सो कर उठती हूँ
उठ कर सोती हूँ
तुम नहीं हो ......
पढ़ती लिखती हूँ
खोना चाहती हूँ
तुम नहीं हो ......
हँसती रहती हूँ
रोना चाहती हूँ
तुम नहीं हो ......
रोती रहती हूँ
हँसना चाहती हूँ
तुम नहीं हो ......
मानना चाहती हूँ
जानना चाहती हूँ
तुम यहीं हो ......
तुम यहीं हो ......

51

तुम यहीं हो

लोग मिलते हैं
बातें करती हूँ
तुम नहीं हो ......
बाहर जाती हूँ
पैदल चलती हूँ
तुम नहीं हो ......
चीज़ें लेती हूँ
समाचार पढ़ती हूँ
तुम नहीं हो ......
बाहर देखती हूँ
कितना शोर है
तुम नहीं हो ......
डाक आती है
पत्र खोलती हूँ
तुम नहीं हो ......
घंटी बजती है
फोन आते हैं
तुम नहीं हो ......
लोग आते हैं
लोग जाते हैं

तुम नहीं हो ......
पूजा करती हूँ
भजन गाती हूँ
तुम नहीं हो ......
सो कर उठती हूँ
उठ कर सोती हूँ
तुम नहीं हो ......
पढ़ती लिखती हूँ
खोना चाहती हूँ
तुम नहीं हो ......
हँसती रहती हूँ
रोना चाहती हूँ
तुम नहीं हो ......
रोती रहती हूँ
हँसना चाहती हूँ
तुम नहीं हो ......
मानना चाहती हूँ
जानना चाहती हूँ
तुम यहीं हो ......
तुम यहीं हो ......

52

रास्ते

रास्ते कहीं पर तो जाते हैं
आओ चलें

बाहर धूप भी है
और धूल भी
और छाया तुम्हारी

जाना तो है ही
चलो चल कर
रास्ता तो देख आएँ

रास्ते कहीं पर तो जाते हैं ......

रमा जोशी — परिचय

जन्म भारत में — शिक्षा शिमला तथा चंडीगढ़ में

शिक्षा — एम ए अंग्रेजी साहित्य में

— चण्डीगढ़ में प्राध्यापक (अंग्रेजी)

विवाह पश्चात इंग्लैंड में प्रवास — (1968)

— बरमिंघम विश्व विद्यालय से मास्टर्ज़ इन सोशल साँइस

इंग्लैड में अध्यापन के साथ विभिन्न सामाजिक कार्यो में सक्रिय

यू के (Midlands) की पहली ऐशियाई मैजिस्टेट (जे पी)
जस्टिस ऑफ पीस नियुक्त (1973)

बचपन से ही कविता, कहानी लिखने का शौक — अनेक रचनाएँ पत्र — पत्रिकाओं में प्रकाशित, आजकल सक्रिय रूप से लेखन में वयस्त हैं।